Postal Reg. No. : XXXXXXXXX

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 2

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 6

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

9 फरवरी 2016 ई

11 जमादिल अव्वल 1438 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

यदि मसीह मरियम मेरे ज़माने में होता तो वह काम जो मैं कर सकता हूँ वह कभी न कर सकता और वह निशान जो मुझ से प्रकट हो रहे हैं वह कभी दिखला न सकता

उपदेश हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

" मुझे कसम है उस हस्ती की जिसके हाथ में मेरी जान है कि यदि मसीह मरियम मेरे ज़माने में होता तो वह काम जो मैं कर सकता हूँ वह कभी न कर सकता और वह निशान जो मुझ से प्रकट हो रहे हैं वह कभी दिखला न सकता और ख़ुदा का फज़ल अपने से ज़्यादा मुझ पर पाता। जबकि मैं ऐसा हूँ तो अब सोचो कि क्या स्थान है उस पवित्र रसूल का जिसकी ग़ुलामी की ओर मैं सम्बंधित हूं। "ज़ालेक फज़्ज़लुल्लाह यौतीहो मनश्याओ" इस जगह कोई ईर्ष्या और द्वेष नहीं जाता ख़ुदा जो चाहे करे। जो उसके इरादे का विरोध करता है वह सिर्फ अपने लक्ष्य में नामुराद ही नहीं बल्कि मर कर जहन्नुम का रास्ता लेता है। मारे गए वे जिन्होंने असहाय प्राणी को ख़ुदा बनाया। मारे गए वे जिन्होंने एक चुने हुए रसूल को स्वीकार नहीं किया। मुबारक वह जिसने मुझे पहचाना। ख़ुदा की सब राहों में आख़ीरी राह हूँ और मैं उसके सब नूरों में से अंतिम नूर हूँ। दुर्भाग्यपूर्ण है जो मुझे छोड़ता है क्योंकि मेरे बिना सब अंधेरा है।"

(रूहानी ख़ज़ायन भाग 19 कश्ती नूह, पृष्ठ 24)

122 वां जलसा सालाना कादियान 2016 ई की संक्षिप्त रिपोर्ट (शुरू जलसा से 125 वां साल)

अहमदियत के केंद्र कादियान दारुल अमान में 122 वें जलसा सालाना का सफल और मुबारक आयोजन

मुस्लिम टेलीविज़न अहमदिया द्वारा सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमेनीन मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ का जलसा सालाना में सम्मिलित लोगों से अन्तिम सत्र में ईमान वर्धक संबोधन

*** 42 देशों से मेहमानों की भागीदारी, 14,242 अहमदियत के परवानो का जलसा में शामिल होना**

*** हुज़ूर अनवर के समापन भाषण के अवसर पर लंदन में 5,230 अहमदियत के परवानों का शामिल होना**

***नमाज़ तहज्जुद* दर्स कुरआन और ज़िक्रे इलाही से परिपूर्ण माहौल * उलमाए कराम की ज्ञान वर्धक तकारीरें *जलसा सर्व धर्म सम्मेलन का आयोजन *महमानों की परिचयात्मक तकारीरें * देशी तथा विदेशी भाषाओं में अनुवाद *अहबाब जमाअत की जानकारी बढ़ाने के लिए विभिन्न प्रशिक्षण मामलों में वृद्धि के लिए वृत्तचित्र और विभिन्न सूचना सम्बन्धी प्रदर्शनी का आयोजन *नए अहमदियों और मित्रों के लिए तब्लीग़ी जलसा * 26 निकाहों के एलाना *प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में जलसा की व्यापक कवरेज *शान्तिमय और सुखद मौसम में जलसा की सारी कार्रवाई का पूरा होना* अलकलम परियोजना का आयोजन *जमाअत अहमदिया इंडोनेशिया से 183 व्यक्ति चार्टर्ड जहाज़ द्वारा जलसा में शामिल हुए। (भाग-3)**

ख़िताब

सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़

तश्शहुद तऊज़ और सूरः फातिहा की तिलावत के बाद सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रहिल अज़ीज ने निम्नलिखित आयत की तिलावत फरमाई:

قُلۡ اِنۡ کُنۡتُمۡ تُحِبُّوۡنَ اللّٰہَ فَاتَّبِعُوۡنِیۡ یُحۡبِبۡکُمُ اللّٰہُ وَ یَغۡفِرۡ لَکُمۡ ذُنُوۡبَکُمۡ ؕ وَ اللّٰہُ غَفُوۡرٌ رَّحِیۡمٌ (आले इमरान: 32)

अनुवाद: तो कह दे, यदि तुम अल्लाह तआला से मुहब्बत करते हो तो मेरा अनुसरण करो अल्लाह तआला तुम से मुब्बत करेगा और तुम्हारे गुनाहों को क्षमा कर देगा और अल्लाह तआला बहुत क्षमा करने वाला (और) बहुत दयालु है।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया: अगर हम चाहते हैं कि अल्लाह की निकटता हासिल हो और वह हमारी दुआओं को सुने तो अल्लाह तआला ने इसके लिए हमें एक सिद्धांत बता दिया कि यह तभी कर सकते हो जब आप रसूल के आदर्श पर चलो और आदर्श पर चलने के लिए यह भी उपकार है कि उसने सहाबा द्वारा वह सब बातें हम तक पहुंचा दीं जिस पर आप (स.अ.व.) का कर्म किया करते थे। यह बात भी समझनी चाहिए कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम प्रत्येक वह काम और बात करने वाले थे जो अल्लाह तआला ने कुरआन में वर्णन फरमाई है। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहो अन्हा के यह पूछने पर कि आप के कर्म क्या थे? तीन शब्दों में बता दिया कि "कान ख़ुलुकुहुल कुरआन" कि आप (स.अ.व.) के आचरण वही थे जो क़ुरआन जैसी महान किताब अपने अंदर समेटे हुए है और इस ज़माने में अल्लाह तआला ने और अधिक एहसान करते हुए अपने फरिस्तादे और आँ हज़रत

शेष पृष्ठ 2 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

पृष्ठ 1 का शेष

सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम मसीह मौऊद को भेजा जिन्होंने नबियों के स्थान और विशेष रूप से हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप के आदर्श का अधिक एहसास दिया।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया: हज़रत मसीह मौऊद फरमाते हैं कि नबी और रसूल और इमाम दुनिया में इसलिए नहीं आते कि उन्हें अपनी पूजा करवानी होती है बल्कि उनका उद्देश्य ही तौहीद की स्थाप्ना होता है और यह कि लोग उनकी शिक्षा का पालन करें और ख़ुदा भी इसी रूप में उनसे प्यार करेगा। इसीलिए आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अल्लाह तआला का प्रिय बनने का तरीका यही बताया कि रसूल अल्लाह (स.अ.व.) का सच्चा अनुसरण किया जाए अत: इस बात को याद रखना चाहिए कि ख़ुदा के सच्चे और सादिक दुनिया में तौहीद की स्थापना के लिए नमूना होते हैं।

सब से पहली बात जो नबी सिखाते हैं और जिस का अत्यधिक स्थान रसूलुल्लाह (स.अ.व.) का है वह तौहीद की स्थापना था। यही बात आप (स.अ.व.) ने अपने मानने वालों में पैदा की। सहाबा ने आप (स.अ.व.) से फ़ैज़ पाया और अल्लाह तआला से प्यार और मुहब्बत की गुणवत्ता को देखा जिसने इनमें भी वास्तविक तड़प पैदा कर दी। सहाबा की बहुत बड़ी भूमिका है बल्कि उपकार है इस नमूना को हम तक पहुंचाने का। इस बारे में हुज़ूर अनवर ने हज़रत उमर रज़ि का एक घटना का संदर्भ में उल्लेख किया कि नबी ने फरमाया है कि अल्लाह के सिवा किसी भी प्रकार उचित नहीं। कुछ लोग अपने प्रियजनों की शपथ लेते हैं। ये बातें एकेश्वरवाद से दूर करने वाली हैं।

एक बार एक प्रश्न करने वाले ने पूछा कि या रसूलुल्लाह (स.अ.व.) कोई अपने सम्मान के लिए कोई बहादुरी के लिए कोई मान ग़नीमत के लिए लड़ता इनमें से जिहाद करने वाला कौन होगा? फरमाया कि वह जो इसलिए लड़ता है कि ख़ुदा की बात बुलन्द हो और तौहीद की स्थापना हो वास्तव में वही जिहाद करने वाला होगा।

एक बार मक्का के सरदारों ने बातचीत करने के लिए आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बुलाया। कहने लगे आप का उद्देश्य धन इकट्ठा करना है तो हम माल देते हैं और देश में सबसे अमीर व्यक्ति बना देते हैं और सरदार बनने की इच्छा है, तो हम आपको अपना सरदार स्वीकार कर लेंगे। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम गलत समझे हो मैं ये बातें नहीं चाहता। मुझे ख़ुदा तआला ने नबी बनाकर भेजा है अत: मैंने ख़ुदा का संदेश पहुंचा दिया है अगर स्वीकार करो तो तुम्हारा अपना फायदा है। यदि नहीं तो सबर करो जब तक ख़ुदा तआला फैसला नहीं फरमा दे फिर दुनिया ने देखा कि किस तरह दुनिया में तौहीद की स्थापना हुई।

हुज़ूर अनवर ने कहा: तौहीद की स्थापना की मेराज उस समय होती है जब इबादत के उच्च नमूने कायम हूं। हमारे आक़ा ने इसके भी उच्च नमूने बनाए जिसकी अल्लाह तआला ने यूं गवाही दी الَّذِي يَرَاكَ حِينَ تَقُومُ وَتَقَلُّبَكَ فِي السَّاجِدِينَ अल्लाह कहता है कि तू ने तौहीद की स्थापना से श्रृद्धालुओं की ऐसी जमाअत बना ली जिनकी रातें इबादतों में गुज़रती हैं। जहां हमें तौहीद के लिए तड़प दिखती है वहाँ यह भी नज़र आता है कि आप (स.अ.व.) अपने मानने वालों में ऐसे सजदे करने वाले पैदा करना चाहते थे जो केवल अल्लाह तआला के आगे झुकने वाले हों।

एक बार आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हर नबी की इच्छा होती है और मेरी इच्छा इबादत करना है। एक सहाबी कहते हैं कि एक बार आप (स.अ.व.) को इबादत करते देखा आप के सीने से ऐसी आवाज़ आ रही थी जैसे हांडी चलने की आवाज़ हो। एक रिवायत है कि जैसे हंडिया उबल रही हो वैसे आवाज़ आती थी। हज़रत आयशा फरमाती हैं कि रातों को जागना मत छोड़ना क्योंकि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नहीं छोड़ते थे। जब बीमार हो जाते तो बैठ कर पढ़ा करते। एक बार फरमाया कि बावजूद बीमारी तथा कमज़ोरी के आज रात भी लंबी सूरतें ही पढ़ी हैं।

आपके सहाबा ने यह तड़प देखी और आपके आदर्श को अपनाया तो जो पहले मुशरिक थे ऐसे इबादत करने वाले बने कि बाद में आने वालों के लिए आदर्श बन गए इस बारे में हज़रत मसीह मौऊद कहते हैं कि सहाबा की क्या स्थिति थी और हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क्या उन में क्रांति पैदा की? وَيَأْكُلُونَ كَمَا تَأْكُلُ الْأَنْعَامُ س يَبِيتُونَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَقِيَامًا कर दिया जिसकी उदाहरण दुनिया की किसी क़ौम के इतिहास में नहीं मिल सकती। इस सच्चाई को ज़माने को स्वीकार करना पड़ा।

इस ज़माने में इस इंकलाब को पैदा करने के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने भेजा। हमारा भी काम है कि हम अपनी समीक्षा करें और विचार करें। नबी दुनिया में सच्चाई फैलाने के लिए आते हैं और इसमें भी आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का उच्च स्थान है कि दुश्मन भी आप की सच्चाई के प्रशंसक थे। एक बार जब दुश्मनों ने आपस में सलाह किया कि आपको जादूगर प्रसिद्ध किया जाए और झूठा प्रसिद्ध कर दिया जाए तो नजर बिन हारिस ने कहा कि मुहम्मद तुम में जवान हुए और सबसे भरोसेमंद और सच्चे थे। अब जब वह संदेश लेकर आए हैं उस पर तुम कहते हो झूठे हैं। न वे झूठे हैं न जादूगर, न याजक हैं न कवि न मजनून हैं।

एक बार अबु जहेल ने कहा कि मैं तुम्हें झूठा नहीं कहता बल्कि तुम्हारी शिक्षा को कहता हूँ। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कहा कि मैं इतना समय तुम में रहा तुम ने कभी मुझे झूठा नहीं कह सके क्या आज शिक्षा के संदर्भ में झूठ बोलूँगा जब सारा जीवन सच बोला।

हज़रत मसीह मौऊद फरमाते हैं कि नबियों ने सच्चाई से अपने आप को मनवाया। कुरआन की आयत فَقَدْ لَبِثْتُ فِيكُمْ عُمُرًا مِّنْ قَبْلِهِ की गवाही कुरआन में मौजूद है। अत: उस नबी के मानने वालों को अपनी समीक्षा भी करने की ज़रूरत है कि उनके मानक क्या चाहिए।

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की एक और विशेषता का उल्लेख करते हुए हज़ूर अनवर ने फरमाया कि ख़ुदा तआला ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जैसे-जैसे सफलता दी उतनी ही विनम्रता बढ़ती गई। एक व्यक्ति आया जो काँपता था और भय खाता था इस को आपने कहा कि मुझसे डरते क्यों हो में तो एक बुढ़िया का पुत्र हूँ।

एक बार आपने फरमाया कि कोई भी अपने कार्यों की वजह से निजात नहीं पाएगा। सहाबा ने पूछा क्या आप भी? आपने फरमाया हां मैं भी सिवाय इसके कि मुझे अल्लाह तआला अपनी रहमत में ले ले। जिसके बारे में अल्लाह कहता है कि उसका हाथ मेरा हाथ है वह अल्लाह तआला से डरने में कितना बढ़ा हुआ है। फरमाया कभी अपने ख़ुदा से विश्वासघात न करो उससे संबंध न छोड़ो।

दुनिया में सफलता पर लोग फिरऔन बनते हैं लेकिन पुर्ण इंसान का आदर्श क्या है? वह शहर जिस ने अन्याय से निकाला और इस्लाम को संसार से मिटाना चाहा। अल्लाह तआला की तकदीर से जब मक्का विजय हुआ और आप (स.अ.व.) ने इस में प्रवेश किया तो किस अवस्ता में? तारीख़ कहती है कि जब विजयी शान से मक्का में आप (स.अ.व.) प्रवेश किया आप की ख़ुशी का दिन था मगर आप (स.अ.व.) ख़ुदा के इन फज़लों पर अभिव्यक्ति की अन्तिम विनम्रता के चरम गुण पर थे ख़ुदा ने जितना ऊंचा क्या आप उतना ही नम्रता से झुकते जाते थे यहाँ तक कि सिर झुकते झुकते ऊंट के कजावे पर लग गया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि देखो हमारे नबी ने जब मक्का पर विजय प्राप्त की तो आप ने इस तरह सिर झुकाया जिस तरह दु:ख के दिनों में झुकाते और सिजदा करते थे।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया: हुज़ूर स.अ.व. की विशेषताए कई मज्लिसों में भी बयान नहीं हो सकते। एक सुंदर पक्ष आप (स.अ.व.) के उत्तम आदर्श दान है, वह बयान करता हूँ । सहाबा बयान करते हैं कि आप (स.अ.व.) से अधिक दान करने वाला देखा ही नहीं। एक रिवायत में है कि आँ हज़रत (स।) से कुछ अंसार ने मांगा आपने दिया। फिर माँगा फिर दिया और फिर माँगा फिर दिया यहाँ तक कि जो कुछ था समाप्त हो गया। फरमाया कि मेरे पास जो माल होता है तुम से रोक नहीं रखता। एक बार नब्बे हजार दिरहम बांट दिए। बकरयों का इतना बड़ा रेवड़ दिया जो एक घाटी में भरा हुआ था। मस्जिद में बहरीन से आने वाले माल का ढेर लगा दिया और नमाज़ के बाद सब माल बंटवा दिया। कभी कभी बद्दू भी बड़े कर्कश शैली में मांगते थे लेकिन हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इसे नज़र अंदाज करके उन्हें दिया करते थे।

हज़रत मसीह मौऊद कहते हैं कि नबियों में तंगी का ज़माना भी आता है और सुविधा का भी तो उनके आदर्श सामने आते हैं। ताकत और शक्ति में माफ करना है मूल विशेषता है। ताकत और सत्ता होना इसलिए ज़रूरी है ताकि माफ करने की विशेषता को दिखाया जा सके। जब कमज़ोरी और सत्ता दोनों ही उपलब्ध हों तब ही ऐसा संभव है कि दोनों प्रकार के आचरण प्रकट हों। इस बारे में सबसे पहले कदम ख़ातुर्मरसुल का है जिन पर दोनों स्थितियाँ आईं जिनमें सभी आचरण सूर्य के समान प्रकट हो गए।

शुक्र करना एक और उच्च विशेषता है जो उच्चतम गुणवत्ता आप के उस्वा में नज़र आता है। आप ने ख़ुदा के शुक्र और बन्दों के शुक्र के उच्चतम नमूने स्थापित किए हैं। यहां तक कि आप (स.अ.व.) पहली बारिश की बूंदें ज़बान पर लिया करते

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्बः जुमअः

आज दुनिया में कोई ऐसा गिरोह नहीं है कोई ऐसी जमाअत नहीं है जिस के सदस्य और व्यक्ति दुनिया के हर शहर और हर देश में एक उद्देश्य के लिए एक हाथ पर जमा होकर अपने धन खर्च करने के लिए प्रस्तुत कर रहे हैं और वे लक्ष्य भी धर्म का प्रकाशन और समाज सेवा के उद्देश्य हो। हां केवल एक जमाअत है जो यह काम कर रही है और वह जमाअत है जो अल्लाह तआला ने इस उद्देश्य के लिए स्थापित की है वह जमाअत है जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम की जमाअत है वह जमाअत है जो मसीह मौऊद और महदी मौऊद की जमाअत है जिसके सुपुर्द इस्लाम के सारी दुनिया में स्थापना का काम है जो पिछले लगभग 128 साल से इस्लाम की सेवा और मानवता की सेवा के लिए अपना माल क़ुरबान कर रही है और यह इसलिए कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस जमाअत को कुरआन की शिक्षा के प्रकाश में माल के सही खर्च और माल की कुरबानी का एहसास प्रदान फरमाया है।

कई लोगों के उदाहरण हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी पुस्तकों और मलफूज़ात में वर्णन किए हैं जिन्होंने अपनी आवश्यकताओं की परवाह न करते हुए धार्मिक कामों के लिए बढ़ चढ़ कर कुरबानी कीं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम जमाअत के लोगों को इस कुरबानी की जाग ऐसी लगी है कि एक के बाद दूसरी पीढ़ी कुरबानी करती चली जा रही है, लेकिन जो लोग दूर देशों के रहने वाले हैं बाद में आकर शामिल हुए हैं और हो रहे हैं वे भी उन बुज़ुर्गों की कुरबानी जब सुनते हैं या फिर यह सुनते हैं कि अमुक उद्देश्य के लिए कुरबानी की ज़रूरत है और अल्लाह तआला के वादे को सुनकर फिर कुरबानी की भावना को समझते हैं वह भी ऐसे ऐसे उदाहरण पेश करते हैं कि आश्चर्य होता है। अमीरों से अधिक औसत दर्जे के लोग और ग़रीब हैं जो कुरबानी करते हैं और अद्भुत नमूने दिखाते हैं।

दुनिया के विभिन्न देशों के अहमदियों की आर्थिक कुरबानी और समय के ख़लीफा की आवाज़ पर लब्बैक कहने के अत्यधिक प्रकाशित और अनुसरण योग्य उदाहरणों का ईमान वर्धक वर्णन।

वक्फे जदीद के 60 वें साल के आरम्भ की घोषणा।

वक्फे जदीद में पिछले साल विश्वव्यापि जमाअत अहमदिया के लोगों ने 80 लाख 20 हज़ार पाउंड की कुरबानी प्रस्तुत की। इस साल भी पाकिस्तान दुनिया की जमाअतों में समग्र वसूली के मामले में शीर्ष पर ही है।

विभिन्न देशों की वक्फ जदीद में कुरबानी का विभिन्न दृष्टियों से समीक्षा अग्रणी कुरबानी करने वाले देशों और जमाअतों का वर्णन। वक्फ जदीद में शामिल होने वाले देशों की संख्या में वृद्धि की तरफ विशेष ध्यान देने की ताकीद।

वे सभी देश भी शामिल होने की संख्या पर ध्यान दें जिनके पिछले साल की तुलना में कमी हुई है और अपनी कमज़ोरियों की समीक्षा करें लोगों में कमजोरियां नहीं काम करने वालों में कमज़ोरी है।

अल्लाह तआला उन सभी कुरबानी करने वालों के मालों और नफ़सों में अपार बरकत डाले और भविष्य में संबंधित अधिकारियों को भी सक्रिय करे कि वह अपना सही काम कर सकें और जो कमियां हैं उन्हें पूरा करने की कोशिश विशेष रूप से शामिल होने वालों में अधिक वृद्धि होना चाहिए। ठीक है पैसे तो बढ़ते हैं लेकिन हर एक को शामिल करना भी आवश्यक है चाहे थोड़ी रकम दे कर शामिल हों।

आदरणीया अस्मा ताहिर साहिबा पत्नी साहिबज़ादा मिर्ज़ा ख़लील अहमद साहिब और आदरणीय चौधरी हमीद नसरुल्लाह साहिब भूत पूर्व अमीर ज़िला लाहौर तथा सदर फज़ल उमर फाऊंडेशन की वफात, मरहूमीन का ज़िक्रे ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़,
दिनांक 6 जनवरी 2017 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ ۔

दुनिया में मनुष्य निजी संतोष के लिए भी, व्यक्तिगत लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए भी धन खर्च करता है और कभी दान भी कर देता है लेकिन आज दुनिया में कोई ऐसा गिरोह नहीं है कोई ऐसी जमाअत नहीं है जिस के सदस्य और व्यक्ति दुनिया के हर शहर और हर देश में एक उद्देश्य के लिए एक हाथ पर जमा होकर अपने धन खर्च करने के लिए प्रस्तुत कर रहे हैं और वे लक्ष्य भी धर्म का प्रकाशन और समाज सेवा के उद्देश्य हो। हां केवल एक जमाअत है जो यह काम कर रही है और वह जमाअत है जो अल्लाह तआला ने इस उद्देश्य के लिए स्थापित की है वह जमाअत है जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम की जमाअत है वह जमाअत है जो मसीह मौऊद और महदी मौऊद की जमाअत है जिसके सुपुर्द इस्लाम के सारी दुनिया में स्थापना का काम है जो पिछले लगभग 128 साल से इस्लाम की सेवा और मानवता की सेवा के लिए अपना माल क़ुरबान कर रही है और यह इसलिए कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस जमाअत को कुरआन की शिक्षा के प्रकाश में माल के सही खर्च और माल की कुरबानी का एहसास प्रदान फरमाया है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक जगह फरमाते हैं कि

"बार बार ताकीद करता हूँ कि अल्लाह तआला की राह में खर्च करो यह अल्लाह तआला के आदेश से है" (यह अल्लाह तआला के आदेश से है) "क्योंकि इस्लाम इस समय पतन की स्थिति में है बाहरी और आंतरिक कमज़ोरियों को देखकर तबीयत व्याकुल हो जाती है और इस्लाम दूसरे विरोधी धर्मों का शिकार बन रहा है।" फरमाया "जब यह हालत हो गई है तो क्या इस्लाम की तरक्की के लिए हम कदम न उठाएं। अल्लाह तआला ने इसी उद्देश्य के लिए तो सिलसिले को स्थापित किया है। इसलिए इसकी तरक्की के लिए कोशिश करना यह अल्लाह तआला के आदेश और इच्छा का अनुपालन है।"

फिर फरमाया "ये वादे भी अल्लाह तआला की तरफ से हैं कि जो व्यक्ति ख़ुदा तआला के लिए देगा मैं उस को कुछ गुना बरकत दूंगा। दुनिया में ही उसे बहुत कुछ मिलेगा और मरने के बाद आख़िरत का बदला भी देख लेगा कि कैसे आराम मिलते हैं। अत: इस समय मैं इस बात की तरफ आप सभी को ध्यान दिलाता हूँ। आप फरमाते हैं कि "मैं इस बात की तरफ आप सभी को ध्यान दिलाता हूं कि इस्लाम की तरक्की के लिए अपने मालों को खर्च करें।" (मल्फूज़ात भाग 393-394)

अत: आपके सहाबा ने इस बात को समझा और अपने माल धार्मिक प्रयोजनों के लिए पेश किए जिसका उल्लेख भी कई मौकों पर आपने फ़रमाया कि कैसे आप के मानने वाले वित्तीय कुरबानी में बढ़ने वाले हैं। जैसे मिनारतुल मसीह के निर्माण के लिए जब तहरीक हुई। बहुत सारी तहरीकें आप फ़रमाते थे। साहित्य प्रकाशन के लिए और दूसरी कुछ प्रयोजनों के लिए इसी तरह मिनारतुल मसीह के लिए भी जब आप ने तहरीक की तो मुंशी अब्दुल अज़ीज़ पटवारी ने जो कुरबानी की इस का उल्लेख करते हुए बल्कि दो व्यक्तियों अब्दुल अज़ीज़ और शादी खान साहिब का उल्लेख फरमाया। आप फरमाते हैं कि "मेरी जमाअत में से दो ऐसे ईमानदार लोगों ने इस काम के लिए चंदा दिया है जो बाकी दोस्तों के लिए वास्तव में ईर्ष्या के स्थान पर हैं। एक उनमें से मुंशी अब्दुल अज़ीज़ नाम है। ज़िला गुरदासपुर में पटवारी हैं जिन्होंने बावजूद अपनी कम दौलत के सौ रुपया इस काम के लिए चंदा दिया है और मैं समझता हूं कि यह सौ रुपया कई साल की उनकी जमा पूंजी होगी।" फरमाया कि "यह इसलिए अधिक सराहनीय हैं कि अब वह एक और काम में भी एक सौ चंदा दे चुके हैं।" फिर फरमाया कि "अन्य श्रृद्धालु जिन्होंने इस समय बड़ी शक्ति दिखलाई है मियां शादी खान लकड़ी व्यापारी निवासी स्यालकोट हैं। अब वह एक काम में डेढ़ सौ रुपये चंदा दे चुके हैं और अब इस काम के लिए दो सौ रुपये चंदा भेज दिया है और यह वह अल्लाह तआला पर भरोसा करने वाला व्यक्ति है कि अगर घर के हर तरह देखा जाए तो शायद सारी संपत्ति पचास रुपए से अधिक नहीं हो" फरमाया कि "उन्होंने लिखा है कि क्योंकि इन दिनों अकाल हैं और दुनियावी व्यापार में साफ विनाश दिखता है तो बेहतर है हम धार्मिक व्यापार कर लें इसलिए जो कुछ अपने पास था सब भेज दिया।" (उद्धरित मजमूआ इश्तेहारात जिल्द 3 पृष्ठ 314-315)

इसी तरह और कई लोगों के उदाहरण हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी पुस्तकों और मलफूज़ात में वर्णन किए हैं जिन्होंने अपनी आवश्यकताओं की परवाह न करते हुए धार्मिक कामों के लिए बढ़ चढ़ कर कुरबानी कीं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत के लोगों को इस कुरबानी की जाग ऐसी लगी है कि एक के बाद दूसरी पीढ़ी कुरबानी करती चली जा रही है, लेकिन जो लोग दूर देशों के रहने वाले हैं बाद में आकर शामिल हुए हैं और हो रहे हैं वे भी उन बुज़ुर्गों की कुरबानी जब सुनते हैं या फिर यह सुनते हैं कि अमुक उद्देश्य के लिए कुरबानी की ज़रूरत है और अल्लाह तआला के वादे को सुनकर फिर कुरबानी की भावना को समझते हैं वह भी ऐसे ऐसे उदाहरण पेश करते हैं कि आश्चर्य होता है। अमीरों से अधिक औसत दर्जे के लोग और ग़रीब हैं जो कुरबानी करते हैं और अद्भुत नमूने दिखाते हैं। उन्हें यह नहीं होता कि हमारी मामूली सी कुरबानी का क्या फर्क पड़ेगा बल्कि वह अल्लाह तआला के वादा को समझते हैं कि जो अल्लाह तआला ने फरमाया कि

وَ مَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ وَ تَثْبِيْتًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ كَمَثَلِ جَنَّةٍۭ بِرَبْوَةٍ اَصَابَهَا وَابِلٌ فَاٰتَتْ اُكُلَهَا ضِعْفَيْنِ ۚ فَاِنْ لَّمْ يُصِبْهَا وَابِلٌ فَطَلٌّ ؕ وَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ

(सूरह अल्बकर:266)

और उन लोगों के उदाहरण जो अपने माल अल्लाह तआला की ख़ुशी चाहते हुए और अपने नफ़सो में से कुछ दृढ़ता देने के लिए खर्च करते हैं ऐसे बाग़ का है जो ऊंची जगह पर स्थित है और उसे तेज़ वर्षा पहुंचे तो वह बढ़ चढ़ कर अपना फल लाए और अगर यह तेज़ बारिश न पहुंचे तो ओस ही बहुत हो और अल्लाह तआला इस पर जो तुम करते हो गहरी नज़र रखने वाला है।

तो यह गरीब लोगों की यह कुरबानी "तुल" अर्थात ओस की तरह है। यह ज़रा सी नमी जो उनकी मामूली सी कुरबानी से धर्म के बाग़ को मिलती है वह अल्लाह तआला की कृपा से असंख्य फल लाती है। हम देखते हैं कि बावजूद हम एक ग़रीब जमाअत के दुनिया में हर जगह इस्लाम के प्रकाशन और समाज सेवा के काम कर रहे हैं और फिर अल्लाह तआला की कृपा से हमारे कामों में बरकत भी है अल्लाह तआला इतना देते हैं कि दुनिया हैरान है कि इतने थोड़े संसाधन तुम इतना काम कैसे कर लेते हो। यह इसलिए होते हैं कि यह कुरबानी करने वाले लोग हैं, जो उन लोगों में शामिल होने की कोशिश करते हैं जिन का उदाहरण अल्लाह तआला ने इस तरह दिया है फरमाया कि يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ अपने माल अल्लाह तआला की ख़ुशी चाहते हुए खर्च करते हैं और जब अल्लाह तआला की ख़ुशी उद्देश्य हो तो फल भी लगते हैं बरकत भी पड़ती है। जैसा कि मैंने कहा उन कुरबानियों के आज भी उदाहरण हैं बल्कि असंख्य उदाहरण हैं उनमें से कुछ प्रस्तुत करता हूँ।

कादियान से हज़ारों मील दूर रहने वाली एक बच्ची जब अहमदियत और सच्चे इस्लाम की आगोश में आती है तो उसकी सोच कैसे बदल जाती है और कुरबानी का उसे क्या एहसास हो जाता है इस की घटना उस बच्ची के मुंह से सुन लें। युगांडा में रहने वाली यह बच्ची है अनपढ़ नहीं बल्कि विश्वविद्यालय में पढ़ रही है। कहती है कि पिछले जुलाई में मुझे विश्वविद्यालय के प्रवेश से पहले कुछ चीज़ें खरीदनी थीं लेकिन इसके लिए राशि अपर्याप्त थी और चंदा भी बकाया था। अत: मैंने राशि चंदे के लिए दे दी। मेरा दृढ़ विश्वास था कि अल्लाह तआला ज़रूर मेरी मदद करेंगे और मैं संतुष्ट थी कि मैंने अपना चंदा अदा कर दिया। एक महीने के बाद जब अब विश्वविद्यालय खुलने में तीन दिन बाकी थे तो मेरी एक आंटी ने मेरी माँ को फोन किया कि मैं कब विश्वविद्यालय जा रही हूँ और मुझे अपने घर बुलाया जब शाम को उनके घर गई तो उन्होंने मुझे कुछ पैसे पकड़ाए जो मेरी विश्वविद्यालय की आवश्यकताओं से बहुत अधिक थे और यह राशि चंदा में दी गई राशि से दस गुना अधिक थी। इस तरह अल्लाह तआला ने मेरी दुआ सुनी और ऐसी जगह से मेरी मदद की, जहां से मुझे उम्मीद नहीं थी।

फिर भारत के ही एक साहिब हैं उनके बारे में वहाँ के इन्सपैक्टर कमर दीन साहिब लिखते हैं कि केरल की जमाअत मनजीरी से एक साहिब टी.के का कारोबार हैं। कहते हैं उनके पास चंदा वक्फ जदीद की वसूली के लिए उनकी दुकान पर गया तो कहने लगे उनका काफी पैसा फंसा हुआ है इसलिए बहुत दिक्कत पेश आ रही है लेकिन इसके बावजूद उन्होंने ने एक भारी राशि का चेक देते हुए कहा कि इस समय तो खाते में इतने पैसे नहीं हैं मगर दुआ करें कि विनीत शीघ्र से शीघ्र इस की अदायगी कर सके। कहते हैं अगले दिन ही उनका फोन आया कि अल्लाह तआला की कृपा से चेक देने के बाद मेरे खाते में काफी बड़ी राशि आ गई है इसलिए आप अपना चेक कैश करा लें और कहने लगे कि यह सिर्फ चंदे की बरकत से है कि इतनी जल्दी अल्लाह तआला ने यह सामान पैदा कर दिया।

फिर पूर्वी अफ्रीका के एक देश तंज़ानिया में रहने वाली एक विधवा महिला का उदाहरण है जिसके बारे में तंजानिया के अमीर साहिब लिखते हैं कि अरिंगा टाऊन के मुअल्लिम साहिब एक विधवा महिला अमीना के पास चंदा वक्फ जदीद लेने के लिए गए तो उन्होंने बड़े दुखी मन से कहा कि इस समय उन के पास कुछ नहीं मगर जैसे ही कहीं से प्रबंध हुआ तो मैं लेकर ख़ुद उपस्थित हो जाऊँगी। मुअल्लिम साहिब अभी घर नहीं पहुंचे थे कि वह महिला दस हज़ार शिलिंग लेकर उपस्थित हुई और बताया कि यह राशि कहीं से आई थी तो सोचा कि आप को दे आऊँ। पहले चंदा अदा करूं अपने खर्च बाद में पूरे करूंगी। कहने लगी मेरा वादा पच्चीस हज़ार का है शेष पंद्रह हज़ार भी जैसे ही मुझे मिले मैं ले कर आ जाऊंगी तो दस मिनट के बाद फिर वह पैसे लेकर आ गईं और उन्होंने कहा कि अल्लाह तआला का व्यवहार देखें कि दस हज़ार जो उसके रास्ते में देकर गई थी अभी घर नहीं पहुंची थी कि अल्लाह तआला ने मुझे पैंतीस हज़ार भिजवा दिए और जिस में से पंद्रह हज़ार बकाया चंदा अदा करने के बाद भी मेरे पास बीस हज़ार बच जाते हैं यह केवल अल्लाह तआला की दी रकम है और चंदे की बरकत है और इस तरह उनका ईमान बढ़ा।

फिर सेंट्रल अफ्रीका का एक देश कांगो है। वहां के लोगों में कैसे कुरबानी की भावना स्थापित हुई और कितनी कुरबानी की भावना है इसका एक उदाहरण देता हूं। वहां के मुबल्लिग़ रमीज़ साहिब लिखते हैं कि कालों मबाई जमाअत के एक दाई इलल्लाह सईदी साहिब आसपास के पांच जमाअतों का दौरा करते हैं। तब्लीग़ करते हैं। आजकल वहाँ हालात ख़राब हैं देश और सुरक्षा की भयावह परिस्थितियों के बावजूद उन्होंने अपने क्षेत्र की सारी जमाअतों का दौरा किया। सफर करने के लिए पुण्य प्राप्त करने के लिए किराया भी बावजूद अच्छी स्थिति न होने के अपनी जेब से अदा किया। इसी तरह सफर में उन्होंने 53 हज़ार चंदा वक्फ जदीद भी इकट्ठा किया और जमा कराया। कहने लगे कि मैं एक पुराना अहमदी हूँ और मुझे युवाओं के लिए नमूना होना चाहिए। अब पुराने अहमदी वहाँ कितने पुराने होंगे।? पंद्रह बीस साल अधिक से अधिक। उनकी उम्र साठ साल से अधिक है लेकिन बड़ी मेहनत से एक तो तब्लीग़ का काम कर रहे हैं दूसरे साथ साथ चंदे की ओर भी लोगों को ध्यान दिलाते हैं। यह रूह है जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानने के

बाद उन लोगों में पैदा हुई दूर दराज़ के क्षेत्रों में रहते हैं। उन क्षेत्रों में सड़कों की सुविधाएं भी नहीं हैं बल्कि वहां सड़कें नहीं हैं ज्यादातर पानी का इलाका है इसलिए नावों पर सफर किए जाते हैं और बड़ी लंबी दूरी है।

फिर पश्चिमी अफ्रीका के एक देश बेनिन के एक अहमदी का नमूना देखें। जिसे अहमदी हुए अभी साल भी नहीं हुआ लेकिन कुरबानी की भावना का एहसास किस गुणवत्ता की है बल्कि यह पुरानों के लिए भी नमूना है। वहाँ के मुबल्लिग़ मुज़फ्फर साहिब लिखते हैं कि करतोनिय क्षेत्र के एक गांव काम्बे में इस साल जमाअत की स्थापना हुई। यहां के निवासी सामान्य रूप में मछलियां पकड़ कर बेचते हैं। मछुआरे हैं और इसी पर उनका गुज़र बसर है। लोकल मिशनरी ने ग्रामीणों को चंदे की तहरीक की तो एक अहमदी दोस्त जो वित्तीय लिहाज़ से कमज़ोर हैं उन्होंने तुरंत तहरीक पर लब्बैक कहते हुए एक हज़ार फ्रैंक की राशि भेंट कर दी और कहने लगे कि मेरे हालात इतने अच्छे नहीं लेकिन मैं नहीं चाहता कि जिस जमाअत में शामिल हुआ हूं उस की कोई तहरीक हो और इसमें शामिल होने से रह जाऊं।

फिर ख़िलाफत के सम्बन्ध और ख़ुत्बा का लोगों पर असर कैसे पड़ता है और फिर कुरबानी की तरफ ध्यान कैसे पैदा होता है इसका उदाहरण पश्चिमी अफ्रीका के देश बुर्किना फासो के कुछ युवाओं का है। देखें अभी अहमदी हुए उन्हें अधिक समय नहीं हुआ लेकिन गुणवत्ता क्या हैं? अमीन बलोच साहिब मुरब्बी हैं लिखते हैं कि वहाँ बतुरा क्षेत्र में जब मैंने 30 दिसंबर 2016 ई को पिछले साल का अंतिम ख़ुत्बा दिया था और नए साल की शुरुआत के बारे में जो ख़ुत्बा दिया था, उसे सुनकर कुछ युवा जो अभी नए अहमदी हुए हैं और कुछ पुराने भी ख़ुत्बा के तुरंत बाद घर गए और जो कुछ नव वर्ष समारोह के लिए एकत्र किया गया था। वह लाकर वक्फ जदीद में दे दिया और कहा कि चूंकि समय के ख़लीफा ने हमें नए साल का जश्न मनाने के तरीका बता दिया है इसलिए हम यह राशि चंदा में देते हैं और रात में तहज्जुद अदा करके नया साल मनाएंगे। इस तरह उस दिन उन्होंने लगभग छिहत्तर हज़ार फ्रैंक सीफह चंदा दिया।

फिर पश्चिमी अफ्रीका के ही एक देश आइवरी कोस्ट के एक छोटे से गांव की नई जमाअत के लोगों की कुरबानी देखें। वहाँ के बवाके क्षेत्र के मुअल्लिम मामादो साहिब लिखते हैं कि हमारे क्षेत्र के एक गांव नियावोगो के लोग इसी साल जमाअत अहमदिया में शामिल हुए। अभी एक साल हुआ है। कहते हैं मैंने उन नए बैअत करने वालों को वक्फ जदीद में शामिल होने और सालाना जलसा में शामिल होने की तहरीक की। इन नए अहमदियों को बताया कि समय के ख़लीफा ने यह कहा है कि सभी अहमदी वक्फ जदीद और तहरीक जदीद में शामिल हों। कहते हैं कि मुझे लगता था कि शायद कुछ लोग थोड़ा चंदा अदा कर दें क्योंकि ग़रीबी बहुत अधिक है लेकिन स्थिति इसके बिल्कुल विपरीत निकली। इस गांव के लगभग हर व्यक्ति ने अपना चंदा वक्फ जदीद अदा किया बल्कि एक दोस्त ने न केवल चंदा वक्फ जदीद अदा किया बल्कि छह सौ किलोमीटर सफर करके जलसा सालाना में भाग भी लिया और आबी जान आए।

फिर कुरबानी का एक उदाहरण और अल्लाह तआला का व्यवहार देखें। तंज़ानिया से यूसुफ उस्मान साहिब मुबल्लिग़ लिखते हैं कि एक अहमदी भाई पैर से विकलांग हैं। इस विकलांगता के कारण कोई काम आदि नहीं कर सकते। तंज़ानिया के हर क्षेत्र में अब तक बिजली की सुविधा उपलब्ध नहीं है, इसलिए कुछ लोग छोटे सौर पैनल लेकर अपने घर पर एकाध बल्ब जलाने का प्रबंधन करते हैं। हमारे यह अहमदी भाई भी छोटे सौर पैनल लेकर लोगों के मोबाइल चार्ज करके गुज़ारा करते हैं और जो भी थोड़ी बहुत आमदनी हो उसके अनुसार नियमित चंदा अदा करते हैं। एक दिन हमारे मुअल्लिम ने उन्हें चंदा अदा करने की ओर ध्यान दिलाया तो कहने लगे कि मुझे पिछले दो दिन में दो हज़ार शिलिंग आमदनी हुई है। अल्लाह तआला की राह में यही अदा कर देता हूँ। मुअल्लिम साहिब ने उन्हें कहा कि आप यह सब राशि चंदे के रूप में अदा कर देंगे तो घर में बच्चों को क्या खिलाएंगे?। कहने लगे कि अल्लाह रज्जाक है वह ख़ुद ही व्यवस्था कर देगा। फिर मुअल्लिम साहिब कहते हैं कि अभी मैंने यह रसीद काटी ही थी कि बहुत सारे लोग उनके पास मोबाइल चार्ज करवाने के लिए आए और उन्हें उस से अधिक आमदनी हुई जितना उन्होंने ने चंदा अदा किया था। उस पर अहमदी भाई ने मुअल्लिम साहिब से कहा कि आपने देखा कि अल्लाह तआला ने चंदा देने में कितनी बरकत दी है कि इस समय इससे बढ़कर राशि लौटा दी है

फिर कैसे कुरबानी के साथ अल्लाह तआला कुरबानी करने वालों को सम्मानित करता है और उनके ईमान में वृद्धि करता है। इस का यह एक और उदाहरण है। तंज़ानिया के क्षेत्र शियांगा के एक जमाअत के एक दोस्त के बेटे को गंभीर मलेरिया हो गया और उसकी जेब में इलाज के लिए केवल पंद्रह सौ शिलिंग थे। सैक्रेटरी माल उनके घर गए और चंदे की ओर ध्यान दिलाया तो उन्होंने तुरंत जेब से ही पैसे निकाल सैक्रेटरी माल को दे दी। यह दोस्त कहते हैं कि पहले तो मुझे ख्याल आया कि बेटे की दवाई के पैसे कहां से आएंगे लेकिन फिर मैंने कहा कि अल्लाह तआला के रास्ते में दिया है तो अल्लाह तआला ख़ुद ही व्यवस्था कर देगा तो कुछ ही देर बाद दूसरे शहर से इन के बड़े बेटे ने फोन किया कि मैं अस्सी हज़ार शिलिंग भेज रहा हूँ और यह पैसे उसी दिन उन्हें मिल गए। बच्चे का इलाज भी हो गया दूसरे काम हो गए जो उनकी ज़रूरतें भी पूरी हो गईं और कहते हैं कि अल्लाह तआला ने उस से कई गुणा मुझे दे दिया और अब यह घटना वे दूसरों को भी सुनाते हैं और चंदे का महत्त्व वहां के स्थानीय लोगों को जो अहमदी हैं उन पर स्पष्ट करते हैं।

फिर पश्चिमी अफ्रीका के एक देश माली की एक व्यक्तिगत कुरबानी की घटना है। वहाँ अहमद बिलाल साहिब मुबल्लिग़ हैं लिखते हैं कि स्कासो क्षेत्र के एक दोस्त ने 2013 ई में अहमदियत स्वीकार की थी और अहमदियत स्वीकार करने के समय बहुत आर्थिक संकट का शिकार थे कर्ज़दार होने के अलावा कई प्रकार की घरेलू परेशानियां थीं और उनकी सेवानिवृत्ति की समय भी क़रीब आ रहा था। अहमदियत की स्वीकृति के बाद उन्हें जब चंदे की बरकत का ज्ञान हुआ तो उन्होंने अपने आप से वादा किया कि वह चंदा नियमित अदा करेंगे तो उन्होंने ऐसा ही किया और कठिन परिस्थितियों के बावजूद अपनी ताकत के अनुसार चंदा अदा करते रहे। कहते हैं कि चंदे की बरकत से देखते ही देखते अल्लाह तआला की कृपा से मेरा सारा कर्ज़ उतर गया। घरेलू परेशानियां ख़त्म हो गईं। सरकार द्वारा मेरे पद में तरक्की भी मिल गई। मेरी सेवानिवृत्ति में भी देरी कर दी गई। अब महोदय वसीयत प्रणाली में शामिल हो चुके हैं।

सिएरा लियोन से मुनीर हुसैन साहिब मुबल्लिग़ लिखते हैं कि वबाजे क्षेत्र की एक जमाअत के एक अहमदी महिला ने चार हज़ार लियोन का वादा किया। उनकी आय का कोई साधन नहीं था छोटा सा बाग़ीचा था जिसमें उन्होंने कसावा लगाया हुआ था। यह वहाँ एक पौधा है जिसकी शक्कर कन्दी की तरह लंबी जड़ें होती हैं वह खाया जाता है तो वही बेचकर गुज़ारा करती हैं। जब चंदा अदा करने का समय निकट आया तो सैक्रेटरी साहिब वसूली के लिए गए तो जो पैसे उन्होंने चंदे के लिए जमा किए हुए थे वह किसी बच्चे ने वहां से उठा लिए और खर्च कर दिए उस पर वह बड़ी परेशानी हुई। अब ईमान की भी हालत देखें। उनका एक बेटा शराब की दुकान पर काम करता था। मजबूरी थी या सही तरह ईमान नहीं लाया होगा। उसने कहा कि मैं पैसे दे देता हूँ आप को कर्ज़ दे देता हूँ उस पर महिला ने सख्ती से मना कर दिया कि यह पैसे हलाल नहीं हैं इसलिए इन पैसों से मैं चंदा नहीं दे सकती। यह है ईमान का सम्मान। लेकिन फिर भी फिर अल्लाह तआला का व्यवहार भी देखें बन्दे का अल्लाह तआला की ख़ुशी चाहना उद्देश्य हो तो अल्लाह तआला ने किया व्यवहार किया कहते हैं इसी दौरान एक अज्ञात व्यक्ति आया जिसे यह बिल्कुल नहीं जानती थीं उसने दस हजार लियोन उन्हें दिए उन्होंने चार हज़ार लियोन चंदे की बजाय दस हजार लियोन चंदे में दे दिए और कहा कि यह सिर्फ चंदा अदा करने के लिए अल्लाह तआला ने मुझे पहुंचाया है और अगले साल के लिए फिर उन्होंने दस हजार लियोन चंदा लिखवा दिया।

सिएरा लियोन से ही अकील साहिब मुबल्लिग़ कहते हैं कि बू क्षेत्र के एक नए अहमदी दोस्त के एक लंबे समय से ज़मीन का झगड़ा चल रही थी और विरोधी पक्ष काफी प्रभाव रखने वाला था। ज़ाहिरी तौर पर मामले को जीतने का कोई रास्ता नहीं दिख रहा था। इसी दौरान उन्होंने मस्जिद में वित्तीय कुरबानी की बरकत के बारे में सुना। वह कहते हैं कि जब मैंने वित्तीय कुरबानी की बरकत के बारे में सुना तो सोचा कि मैं भी चंदा दे देता हूँ। यह नए अहमदी ईसाई से अहमदी हुए थे। हो सकता है कि इस चंदे की बरकत से मेरी ज़मीन का मामला तय हो जाए तो उन्होंने सामर्थ्य अनुसार चंदा अदा किया इसके कुछ समय बाद ही मामले का फैसला उनके पक्ष में हो गया जो असंभव प्रतीत होता लग रहा था। यह दोस्त कहते हैं कि मुझे ईमान है कि यह सब वित्तीय कुरबानी की बरकत की वजह से हुआ है।

कांगो कनसाशा से मुबल्लिग़ शाहिद साहिब लिखते हैं कि एक महिला छोटे पैमाने पर व्यापार करती हैं। कहती हैं कि साल के शुरू में घरेलू परिस्थितियों के कारण ऐसा लग रहा था कि इस व्यवसाय में लाभ नहीं होगा लेकिन मैंने साल के शुरू में वक्फ जदीद का चंदा अदा कर दिया और सोचा कि अल्लाह तआला के साथ किए गया व्यापार घाटे का शिकार नहीं हो सकता। बयान करती हैं कि अल्लाह तआला की कृपा से उन्हें व्यापार में लाभ हुआ और देश की वर्तमान स्थिति के बावजूद व्यापार में कोई घाटा नहीं हुआ।

फिर अहमदियों की कुरबानी का दूसरों पर कितना असर होता है और यह भी तब्लीग़ के रास्ते खोलता है। बांग्लादेश के अमीर साहिब कहते हैं कि तीन दोस्त जिन्हें तब्लीग़ की जा रही थी लेकिन काफी तब्लीग़ के बावजूद कोई बैअत के लिए तैयार नहीं हो रहा था। पिछले जुम्अ: ये तीनों दोस्त मस्जिद आए जुम्अ: के ख़ुत्बा के दौरान वक्फ जदीद के बारे में ध्यान दिलाया गया तो ख़ुत्बा के बाद लोग चंदे अदा करने के लिए लाइनें बनाकर खड़े हो गए। इन तब्लीग़ किए जाने वाले दोस्तों ने जब यह दृश्य देखा तो कहने लगे कि चंदा लेने के लिए हमारे मौलवियों का गला और ज़बान दोनों सूख जाते हैं और फिर भी लोग चंदा नहीं देते यहाँ एक छोटी सी घोषणा की गई है और लोग चंदा देने के लिए लाइनें बनाकर खड़े हो गए हैं। यही मूल इस्लामी रूह है इसलिए इन तीनों दोस्तों ने इस दृश्य को देखने के बाद उसी समय बैअत कर ली और वक्फ जदीद में चंदा भी अदा कर दिया।

फिर बेनिन के क्षेत्र के मुअल्लिम अब्दुल्लाह साहिब लिखते हैं कि एक नई अहमदी जमाअत "पापाज़ा"(Kapkpaza) में चंदे की वसूली के लिए दौरा किया तो वहां पर मौजूद एक नए अहमदी हाजी अबू बकर साहिब ने पूछा कि यह चंदा कहां और कैसे इस्तेमाल किया जाएगा? उन्हें वित्तीय प्रणाली का सही तरह पता नहीं था। उन्हें बताया गया कि जमाअत अहमदिया इन्हीं चन्दों से मस्जिदों का निर्माण करती है। कुरआन का अनुवाद और धार्मिक पुस्तकें प्रकाशन करती है। इसी तरह इन्हीं चन्दों से अस्पताल स्कूल और अनाथालय निर्माण किए जाते हैं। अत: चंदे में दिया जाने वाला एक पैसा विशेष रूप से धार्मिक कार्यों और कल्याणकारी कार्यों में इस्तेमाल किया जाता है। अबू बकर साहिब ने जब यह सुना तो कहने लगे मौलवी मुझ से ज़कात और दान लेने के लिए आते थे मगर उन्होंने कभी नहीं बताया कि यह पैसे कहां खर्च होंगे। अत: इसके तुरंत बाद उन्होंने चंदा अदा किया और कहा कि आगे से जमाअत के सभी चन्दों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लूंगा।

अत: कि हम देखते हैं कि इस युग में भी अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत को ऐसे लोग प्रदान कर रहा है जो कुरबानी में बढ़ने वाले हैं। नए अहमदी होते हैं और दिनों में उन के अंदर अल्लाह तआला के धर्म की लिए कुरबानी करने के लिए एक तड़प पैदा हो जाती है लेकिन यह उन लोगों के लिए भी सोचने का स्थान है बल्कि चिंता का स्थान है जो अच्छी स्थिति में रहते हैं और अल्लाह तआला ने उन्हें सुविधाऐं भी दी हुई है। अमीर देशों में रहते हैं लेकिन उनकी कुरबानी मामूली होती हैं। बहरहाल यद्यपि यहां भी कई ऐसे हैं जो असाधारण कुरबानी करने वाले हैं लेकिन बहुत सारे अमीर ऐसे हैं हर जगह जो इस ओर ध्यान कम देते हैं। उन्हें इस ओर ध्यान देना चाहिए।

जैसा कि जनवरी के पहले शुक्रवार में वक्फ जदीद के नए साल की शुरुआत की घोषणा का तरीका है तो इन कुछ घटनाओं के बाद जो काफी घटनाओं में से कुछ मैंने लिए थे या चंदे के महत्त्व बताने के बाद अब मैं वक्फ जदीद के 60 वें वर्ष के शुभारंभ की घोषणा करता हूं और पिछले साल के अल्लाह तआला के फज़लों का उल्लेख भी कर दूं कि वसूली क्या हैं?

वक्फ जदीद का साल 31 दिसंबर को समाप्त होता है। 59वां साल 31 दिसंबर 2016 ई को समाप्त हो गया। अल्लाह तआला की कृपा से दुनिया की जमाअतों ने जो अब तक रिपोर्ट आई है उसके अनुसार, वक्फ जदीद में 80 लाख 20 हज़ार पाउंड की कुरबानी प्रस्तुत की। पिछले साल से यह 11 लाख 29 हज़ार पाउंड अधिक है और इस साल भी पाकिस्तान दुनिया की जमाअतों में समग्र रूप से वसूली के मामले में शीर्ष पर ही है।

स्थानीय मुद्रा के मामले में पिछले साल की तुलना में काफी वृद्धि करने वाले देशों में घाना अव्वल है। पश्चिमी अफ्रीका के देश घाना, फिर जर्मनी है। फिर पाकिस्तान फिर कनाडा।

अफ्रीकी देशों में जिन देशों ने उल्लेखनीय कुरबानी की है वह माली है। बुर्किना फासो है। लाइबेरिया है। साऊथ अफ्रीका है। सिएरा लियोन है। बेनिन है।

पाकिस्तान के अलावा कुल वसूली के मामले में विदेशों में पहली दस जमाअतें। नंबर एक पर यू.के, ब्रिटेन है। नंबर दो पर जर्मनी। नंबर तीन पर अमेरिका। चार कनाडा । पांच पर भारत। छह ऑस्ट्रेलिया। सातवें नंबर पर मध्य पूर्व का एक देश। आठवें नंबर पर इंडोनेशिया है। नौवें नंबर पर फिर मध्य पूर्व का एक देश है। दसवें नंबर पर घाना है। और उसके बाद फिर बेल्जियम और स्विट्जरलैंड आते हैं।

प्रति व्यक्ति अदायगी के मामले में अमेरिका नंबर एक पर है। फिर स्विट्जरलैंड फिर फिनलैंड। फिर ऑस्ट्रेलिया है। सिंगापुर है। फ्रांस है। फिर जर्मनी है। फिर टीनियडाड फिर बेल्जियम फिर कनाडा। ब्रिटेन नंबर एक आने के बावजूद प्रति व्यक्ति अदायगी में पीछे है।

अल्लाह तआला की कृपा से इस साल वक्फ जदीद में 13 लाख 40 हजार चंदा देने वाले शामिल हुए जो पिछले साल से 1 लाख 5 हज़ार अधिक हैं। संख्या में वृद्धि के आधार पर कनाडा भारत और ब्रिटेन के अलावा अफ्रीका में गिनी कनाकरी कैमरून जाम्बिया सेनेगल बेनिन नाइजर कांगो कनसाशा बुर्किना फासो और तंजानिया ने बहुत काम किया है।

नाइजीरिया ने इस साल पूरी तरह ध्यान नहीं दिया क्योंकि उनकी संख्या के लिहाज़ से उन की काफी बड़ी संख्या गिरी है। अगर पिछले साल के मुताबिक नाइजीरिया की और एक दो और देशों की संख्या होती बल्कि केवल नाइजीरिया की ही अधिक होती तो यह तेरह लाख चालीस हज़ार के बजाय चौदह लाख शामिल होने वाले हो जाने थे। इसका मतलब यह है कि वहाँ बहुत अधिक सुस्ती दिखाई गई है या रिपोर्ट सही नहीं बनी या रिपोर्टें ली नहीं गईं। जमाअत के लोगों की ईमानदारी का जहां तक संबंध है इसमें कोई कमी नहीं चाहे अफ्रीका या कोई भी देश है यह सही तरह उन तक अप्रोच नहीं की गई और सैकर्ट्री ही हैं जिनमें आमतौर पर सुस्ती होती है। अब रबवा से मुझे एक व्यक्ति ने लिखा कि सदर मुहल्ला उनके पास आए और उन्होंने कहा कि आप का वादा वक्फ जदीद नहीं है और अदायगी भी नहीं है उन्होंने कहा यह कैसे हो सकता है मैं तो बड़ा नियमित देता हूँ उन्होंने कहा कि यह इस तरह हो गया कि इस साल हमारा सैक्रेटरी वक्फ जदीद इतना सुस्त था कि हमारे मुहल्ले के किसी व्यक्ति से वादा लिया ही नहीं गया और न सही तरह वसूली हुई है और पता लगा कि सैकर्ट्रियों की सुस्ती की वजह से कई लोग कई बार वंचित रह जाते हैं और यही हाल मुझे लगता है नाइजीरिया में हुआ है। इसके अलावा संख्या में अमेरिका में भी कमी हुई है हालांकि वहाँ संख्या की कमी का कोई औचित्य नहीं, न ही नाइजीरिया में कोई औचित्य है क्योंकि संख्या तो बढ़नी चाहिए लेकिन अमेरिका ने जैसा कि मैंने कहा प्रति व्यक्ति कुरबाी की गुणवत्ता बहुत बढ़ाई है माशा अल्लाह और नंबर एक पर है। इसी तरह वे सभी देश भी शामिल होने की संख्या पर ध्यान दें जिनके पिछले साल की तुलना में कमी हुई है और अपनी कमज़ोरियों की समीक्षा करें लोगों में कमज़ोरियां नहीं काम करने वालों में कमज़ोरी है।

चंदा वयस्कों में यह भी एक वक्फ जदीद का विभाग होता है इसमें पाकिस्तान की जमाअतों में पहले नंबर पर लाहौर है फिर रबवा है फिर कराची है और इसके अलावा फिर ज़िलों में इस्लामाबाद फिर गुजरांवाला फिर गुजरात, मुल्तान, उम्र कोट, हैदराबाद, पेशावर, मीरपुर, ओकाड़ा, डेरा ग़ाज़ी खान।

अत्फाल का कार्यालय अर्थात बच्चों की जो कुरबानी है उसमें भी लाहौर नंबर एक पर है, फिर रबवा है, फिर कराची है, इसके बाद सियालकोट, रावलपिंडी, गुजरांवाला, गुजरात, हैदराबाद, डेरा ग़ाज़ी खान, कोटली, कश्मीर,, मीरपुर ख़ास, मुल्तान और बहावल नगर।

कुल वसूली के मामले में ब्रिटेन की शीर्ष दस जमाअतें वोस्टर पार्क, मस्जिद फज़ल, नंबर तीन पे बर्मिंघम साउथ, फिर पटनी, फिर रेंस पार्क, ब्रेड फोर्ड नार्थ, फिर न्यू मोलडन, फिर ग्लासगो फिर बर्मिंघम वेस्ट और फिर जलनघम।

कुल वसूली के मामले में क्षेत्रों में बरतानिया लंदन बी नंबर एक पर है फिर लंदन ए फिर मिड नीदरलैण्ड फिर नॉर्थ ईस्ट फिर साउथ।और वसूली के मामले में जर्मनी की पांच लोकल इमारते हैं। हैम्बर्ग नंबर एक पर है। फिर फ्रैंकफर्ट है। फिर वज़बादन है। फिर मोरफलडिं वालड आफ, फिर डिटसन बाख और समग्र वसूली के मामले में दस जमाअतें हैं रोईडर मार्क, नोईस और फ्रीडबरग, नीडा फलोरल्स हाईम, हानाउ, कोलोन, कोबलनज़, लानगनज़, महदी आबाद।

अमेरिका की पहली दस जमाअतें। नंबर एक पर सिलिकॉन वैली फिर सेयाटल फिर डेट्रायट फिर सिल्वर स्प्रिंग, सेंट्रल वर्जीनिया, लॉस एंजिल्स ईस्ट फिर डलास फिर वोलसटन फिर फिलोडल्फ़िया फिर लारल।

वसूली की दृष्टि से कनाडा की अमारतें नंबर एक पर कैलगरी, फिर पीस विलेज फिर वान फिर वैंकूवर फिर मिसिसॉगा।

अब दस जमाअतें वसूली की दृष्टि से जो हैं और उनमें डरहम नंबर एक पर फिर हैमिल्टन ईस्ट, सिस्काटऊन साऊथ, सिस्काटाऊन नॉर्थ और वैंडसर फिर लॉयड मिनिस्टर फिर ओटावा पश्चिम फिर ओटावा ईस्ट फिर बैरी फिर रेजाईना

दफतर बाल में उनके पांच प्रमुख स्थान यह हैं। डरहम नंबर एक पर फिर ब्रैड फोर्ड नंबर दो फिर सिस्काटाऊन साउथ, सिस्काटाऊन नॉर्थ फिर लॉयड मिनिस्टर

रेजनज़ इनके हैं कैलगरी नंबर एक, फिर पीस विलेज फिर बरामटन फिर वान और वेस्टर्न।

भारत में यह प्रान्त हैं नंबर एक पर केरल, नंबर दो पर जम्मू कश्मीर फिर तमिलनाडो फिर कर्नाटक फिर तेलंगाना फिर उड़ीसा फिर पश्चिम बंगाल फिर पंजाब फिर उत्तर प्रदेश फिर दिल्ली फिर महाराष्ट्र।

भारत की दस जमाअत हैं कैरोलाई नंबर एक पर, फिर कालीकट, फिर हैदराबाद, पत्तपिरयम, फिर कादियान फिर किनानूर टाउन फिर कोलकाता फिर बेंगलुरु फिर सोलोर और फिर पंगाडी।

ऑस्ट्रेलिया की जमाअतें हैं कासल हिल नंबर एक पर, फिर बिस्ज़बेन लोगान, माज़न पार्क, पैरोक, पीज़थ, फिर एडिलेड साउथ, फलंपटन, कैनबरा, लांग वारिन एडिलेड वेस्ट।

अल्लाह तआला उन सभी क़ुरबानी करने वालों के मालों और नफ़सों में अपार बरकत डाले और भविष्य में संबंधित अधिकारियों को भी सक्रिय करे कि वह अपना सही काम कर सकें और जो कमियां हैं उन्हें पूरा करने की कोशिश करें। विशेष रूप से शामिल होने वालों में अधिक वृद्धि होनी चाहिए। ठीक है पैसे तो बढ़ते हैं लेकिन हर एक को शामिल करना भी आवश्यक है चाहे थोड़ी रकम दे कर शामिल हों।

अब मैं नमाज़ों के बाद दो नमाज़ जनाज़ा ग़ायब भी पढ़ाऊंगा। पहला जनाज़ा है आदरणीया आस्मा ताहिरा साहिबा का जो आदरणीय साहिबज़ादा मिर्ज़ा ख़लील अहमद साहिब की पत्नी थीं। 23 दिसंबर 2016 को 79 साल की उम्र में कनाडा में उनकी वफात हो गई। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। जून 1935 ई में भागलपुर में पैदा हुई थीं। आपके पिता का नाम मौलवी अबदुल बाकी साहिब था और मां सफिया ख़ातून साहिबा। उनके पिता लंबा समय जमाअत की कनरी में फैक्टरी थी वहाँ काम करते रहे और लंबा समय कनरी जमाअत के सदर भी रहे।

उन के दादा हज़रत अली अहमद साहिब जो थे उन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत की थी। सहाबी थे। उनकी बैअत की घटना आदरणीया अमतुन्नूर साहिबा वर्णन करती हैं। कहती हैं कि हमने सुना हुआ है कि वह कादियान आए तो नौवीं कक्षा में पढ़ते थे। कादियान जाते हुए अमृतसर रेलवे स्टेशन पर मौलवी मोहम्मद हुसैन बटालवी ने उन्हें रोकने की कोशिश की तो मौलवी साहिब से कहा कि मेरी मां ने सूरज चाँद ग्रहण का निशान पूरा होने पर मुझे अनुसंधान के लिए कादियान भिजवाया है और आप के इस काम से मुझे मिर्ज़ा साहिब की प्रामाणिकता स्पष्ट हुई है कि आप जैसा इतना बड़ा मौलवी क्यों किसी झूठे नबी के दावेदार के लिए इतना समय बर्बाद करेगा। फिर आपका यह फिरना समय बर्बाद करना ही बताता है कि हज़रत मिर्ज़ा साहिब सच्चे हैं।

6 जनवरी 1964 को आस्मा साहिबा की शादी मिर्ज़ा ख़लील अहमद साहिब से हुई। मिर्ज़ा ख़लील अहमद साहिब हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो के पुत्र थे और हज़रत ख़लीफतुल मसीह अव्वल के नवासे। हज़रत साहिबज़ादी अमतुल हई साहिबा के गर्भ से पैदा हुए थे। मुकर्रमा आस्मा ताहिरा साहिबा को जनरल सैक्रेटरी लजना इमा अल्लाह मरकज़िया के रूप में फिर सचिव ज़ियाफत लजना मरकज़िया के रूप में फिर सदस्य सार्वभौमिक तब्लीग़ कमेटी के रूप में फिर स्थानीय लजना में भी काम करने की तौफीक मिली।

उन्होंने आस्मा ताहिरा साहिबा के पिता 1975 ई में वफात पा गए थे। तब उनकी मां उनके साथ रहीं और आस्मा ताहिरा साहिबा मेरी ममानी थी। इस मामले में मुझे भी पता है कि ससुराल में उनका अपनी ननदों और रिश्तेदारों से बहुत स्नेह और प्यार का रिश्ता था। बीमारी के दिनों में मिल के आया हूँ आज कल कनाडा में थी उनकी बीमारी की ऐसी हालत थी जब मैं गया हूँ और मिला हूं तो हिल नहीं सकती थीं लेकिन उनकी विनम्रता का यह हाल था तब भी उन्होंने कहा कि मेरे कपड़े निकाल कर रखो। तैयारी करो, शायद मेरा वह मुझे मुलाकात के लिए बुला लें बजाय इस के कि मुझे संदेश भेंजें कि मुलाकात के लिए आओ। यह उम्मीद पर थी कि मैं उन्हें वहाँ बुलाऊंगा। बहरहाल मैं मिल कर आया। बड़ा ख़ुश हुईं। उनकी औलाद कोई नहीं थी उसकी बहन की एक बेटी थी जो उन्होंने पाली। जो पांच साल की उम्र में आ गई। वह कहती हैं कि मुझे पूरी तरह से अपने बच्चों की तरह पाला और शादी के समय भी मेरे पूरे शादी के सामान पूरे किए। मेरे प्रशिक्षण में भी कोई कसर नहीं छोड़ी। जब मैं परेशान होती मुझे दुआ के लिए कहतें कि दुआ करो इंशा अल्लाह समस्या का समाधान होगा। दुआओं में बड़ा विश्वास था। बच्चों से बड़ा प्यार था उनके प्रशिक्षण का विशेष रूप से ध्यान रखती थीं और कहा करती थीं कि बच्चों को मस्जिद लेकर जाया करो क्योंकि मस्जिद में उन्हें व्यस्त रखोगी तो बच्चे कभी बिगड़ेंगे नहीं और बर्बाद नहीं होंगे। जमाअत से जुड़े रहने की हमेशा हिदायत करती थीं। यह बच्ची कहती है कि मुझे वसीयत करने की भी हिदायत की और हमेशा उसकी हिदायत करती रहीं कि जमाअत से हमेशा जुड़े रहना। कर्मचारियों से भी बहुत नरमी का व्यवहार था। घर में नौकरानी थी उनकी इस बारे में अपनी गोद लेने बच्ची को कहा था कि मेरे बाद उसका ख्याल रखना और उसे जो क्वार्टर मैंने घर में दिया हुआ है वहाँ से निकालना नहीं है। अल्लाह तआला उनसे माफी और दया का व्यवहार करे।

दूसरा जनाज़ा है आदरणीय चौधरी हमीद नसरुल्लाह ख़ान साहिब का जो 4 जनवरी 2017 ई को लाहौर में 83 साल की उम्र में वफात पा गए। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। चौधरी हमीद नसरुल्लाह खान के दादा हज़रत चौधरी नसरुल्लाह ख़ान हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी थे और उनके नाना हज़रत चौधरी फतह मुहम्मद साहिब सियाल थे। यह भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी थे। उनके पिता चौधरी मोहम्मद अब्दुल्ला खान एक लंबे समय तक कराची के जमाअत के अमीर रहे। चौधरी ज़फ़रुल्लाह खान उनके ताया भी थे और ससुर भी थे। 1964 ई में हमीद नसरुल्लाह खान की शादी अमतुल हई साहिबा सुपुत्री चौधरी ज़फ़रुल्लाह खान के साथ हुई और उनकी औलाद है मुस्तफा नस्रुल्लाह खान और इब्राहीम नसरुल्लाह खान जो सोलह साल की उम्र में वफात पा गया था और आयशा नसरुल्लाह एक बेटी हैं। चौधरी ज़फ़रुल्लाह खान की बेटी से चौधरी हमीद नसरुल्लाह की जो शादी हुई थी उसकी पहले भी डॉक्टर एजाज़ उल हक साहिब से शादी हुई थी जिस से उनके दो बेटे थे। मोहम्मद इनाम उल हक और अहमद नसरुल्लाह। अहमद नसरुल्लाह साहिब को 5 फरवरी 1994 ई को लाहौर में शहीद कर दिया था तो उस समय उनके दो बेटे और एक बेटी हैं। पत्नी के जो पहले बच्चे थे उन्हें भी बड़े प्यार से और बच्चों की तरह उन्होंने हमेशा अपने साथ रखा है।

हज़रत ख़लीफतुल मसीह सालिस ने उन्हें 1975 में जमाअत अहमदिया लाहौर का अमीर निर्धारित किया था। चौंतीस साल अल्लाह तआला की कृपा से यह जमाअत अहमदिया लाहौर की इमारत पर फ़ाइज़ रहे। 2009 ई में उनकी तबीयत ज्यादा ठीक नहीं रहती थी तो फिर मेरे कहने पर कि देख लें अपने आप को फिर बताएं तो उन्होंने कहा कि ठीक है मैं काम से माफी करता हूँ। क्षमा इस दृष्टि से कि सेहत आज्ञा नहीं देती कि इमारत का काम बड़ा व्यापक काम है कि चला सकूं तो उसके बाद फिर नए अमीर शेख मुनीर साहिब नियुक्त हुए थे जिनकी 2010 ई में शहादत हुई। 2008 तक या 2009 तक लगभग यह अमीर रहे हैं।

1974 ई के जो विरोध के हालात थे इसमें भी यद्यपि यह नियमित अमीर तो नहीं थे लेकिन बहुत सारी जिम्मेदारी हज़रत ख़लीफतुल मसीह सालिस ने उनको सौंपी हुई थीं और बड़ी खूबी से अंजाम देते थे। हाईकोर्ट में जब 1974 ई में जस्टिस समदानी जांच आयोग का गठन हुआ है तो उसमें भी आप की कॉफी सेवाएं की थीं। 1984 ई की परीक्षा के दौर में जो मामले वफाती शरीयत कोर्ट लाहौर हाई कोर्ट में कार्यवाही लंबित थी उसमें भी आप ने विभिन्न सेवाऐं दें। उन्हें भी सम्मान प्राप्त था कि हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबि पाकिस्तान से हिजरत के अवसर पर आप रबवा से लंदन तक हुज़ूर साथ थे बल्कि रबवा से कराची तक जहां तक मेरा ज्ञान है कार ड्राइव करने वाले भी यही थे। उनके इमारत के समय में दारुल ज़िकर लाहौर का विस्तार हुआ और वह तो अब तक जारी है बहरहाल लेकिन काफी काम हुआ। इमारत के समय लाहौर में कई सुंदर मस्जिदों की वृद्धि हु।ई उनके दौर में जमाअत अहमदिया लाहौर को उत्तम रूप में वित्तीय क़ुरबानी की ताकत मिली। पिछले 32 साल से यह फ़ज़ल उम्र फाउंडेशन के अध्यक्ष के रूप में भी सेवाएं कर रहे थे। 1984 ई में हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबि ने पाकिस्तान से इंगलिस्तान हिजरत के समय जैसा कि मैंने कहा कि उन्हें सफर की तौफीक मिली और इयान एडमसन की किताब है इसमें उनका उल्लेख भी किया गया है ।

लाहौर के सैक्रेटरी अमूरे आमा चौधरी मुनव्वर साहिब लिखते हैं कि हमीद नसरुल्लाह खान अपने साथ काम करने वाले कार्यकर्ताओं का बहुत ख्याल रखते थे। उनकी छोटी ज़रूरतों का ख्याल रखते। अगर उनसे कोई परामर्श मांगा जाता तो बड़े प्यार और मुहब्बत से सलाह देते। कहते हैं नौ साल क़ायद जिला लाहौर रहा मगर कभी किसी बात पर नाराज़गी व्यक्त नहीं की। ख़ुद्दामुल अहमदिया के कामों में बहुत अधिक सहयोग करते। ख़ुद्दामुल अहमदिया के पांच इज्तिमा लाहौर से बाहर आयोजित करवाने का मौका मिला। उनमें उन्होंने हमारा बड़ा मार्गदर्शन किया और एक एक चीज़ का मार्गदर्शन करते थे। चौधरी हमीद नसरुल्लाह खान बड़े अच्छे प्रशासन करने वाला भी थे और काम को समय पर, मौके पर करने वाले थे सभी जमाअतों का दौरा करते क्षेत्र के सदरों के साथ उनका व्यक्तिगत संबंध था। कार्यकारिणी के सदस्यों को अपना दोस्त और अपना हाथ समझते थे।

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN XXX
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
PUNHIN 01885 Vol. 2 Thursday 9 February 2017 Issue No. 6

MANAGER : NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
ANNUAL SUBSCRIPTION : Rs. 300/-

हकीम तारिक साहिब कहते हैं कि ख़िलाफत की आज्ञाकारिता आप में कूट कूट कर भरी हुई थी। जमाअत के कार्यकर्ताओं और कर्मचारियों के साथ अत्यंत दया और प्यार से पेश आते। बहुत अधिक विश्वास करते। उन्हें बहुत सम्मान देते और पहले मैं नाज़िर आला था तो मेरे साथ भी जितना समय भी उन्होंने अमीर के रूप में काम किया तो वहां भी केंद्र के साथ पूर्ण सहयोग के साथ और सही आज्ञाकारिता के साथ काम किया। नाज़िर आला के रूप में भी उन्होंने मेरे साथ काम किया फिर ख़िलाफत के बाद भी जब तक यह लाहौर के अमीर रहे चरम सहयोग से काम किया और आज्ञाकारिता की भावना उनमें बड़ी थी।

कर्नल नईम सिद्दीकी साहिब लाहौर के उप अमीर ज़िला हैं वह लिखते हैं कि ख़िलाफत के साथ अपने संबंध की घटनाओं का वर्णन करने शुरू करते थे तो बयान करते चले जाते थे। कर्नल नईम साहिब ने यह घटना लिखी है एक बार वह बहावलपुर में किसी काम से जा रहे थे तो उन्हें रास्ते में हज़रत ख़लीफतुल मसीह सालिस का संदेश मिला कि रबवा पहुंचें तो बहावलपुर अपना काम छोड़कर तुरंत रबवा पहुंच गए थे और रातों रात आकर नमाज़ फजर होने से पहले पहुंच गए और कहते हैं मैंने बाहर टहलना शुरू कर दिया और जब उन्होंने द्खा कि अब तहज्जुद का समय है या तहज्जुद या नमाज़ के बीच का समय है फिर उन्होंने यह संदेश भिजवाया कि मैं आ गया हूँ और हाज़िर हूं।

गरीबों के वज़ीफे जारी किए हुए थे न केवल अपने नाम से बल्कि अपनी पत्नी और पिता और चौधरी ज़फ़रुल्लाह खान के नाम से भी वज़ीफे जारी किए हुए थे। जब भी किसी का निवेदन आता तो उसे मार्क कर देते कि इस को मेरे खाते से वज़ीफा दिया जाए या पत्नी के खाते से या किसी और के खाते से और यह भी उन्होंने बड़ा सही लिखा है कि हमीद नसरुल्लाह खान जमाअत अहमदिया लाहौर का एक इतिहास था। उनमें बहरहाल अल्लाह तआला की ओर से नेतृत्व की क्षमता भी थी और उसका सही उपयोग भी वह करते थे।

नासिर शम्स साहिब जो फज़ल उमर फाउंडेशन के सचिव भी हैं(जैसा कि मैंने बताया कि 32 साल फज़ल उम्र फाउंडेशन में सदर भी थे) हज़रत चौधरी ज़फ़रुल्लाह खान की मृत्यु के बाद 1986 में वह बतौर अध्यक्ष नियुक्त हुए और अंतिम सांस तक लगभग 32 साल तक उन्हें बतौर सदर फज़ल उम्र फाउंडेशन सेवा की तौफ़ीक़ मिली। बहुत सहानुभूति करने वाले, दूसरों के ग़म में सम्मिलित होने वाले, दयालु, सभ्य और शालीन इंसान थे। संबंधों का दायरा बहुत व्यापक था और इन संबंधों को हमेशा जमाअत के हित के लिए इस्तेमाल करते थे। सिलसिला के एक अत्यंत चरम सेवक ख़लीफ़ा के सुल्तान नसीर ख़िलाफत के लिए अत्यंत सम्मान रखने वाले वफादार इंसान थे। बावजूद कमज़ोरी और बीमारी के फाउंडेशन के जलसों में शामिल होते रहे और बहुत राय देने वाले और मामले को समझने वाले थे अपनी खुदा तआला द्वारा दी गई क्षमता से मामले की तह तक पहुँच जाते और फिर आपसी परामर्श से फैसला करते।

मिर्ज़ा नदीम साहिब कहते हैं कि उन्होंने मुझे ख़ुद सुनाया कि जब उन्हें 1975 ई में अमीर जमाअत निर्धारित किया गया तो बड़ी घबराहट में रबवा जाकर हज़रत ख़लीफतुल मसीह सालिस की ख़िदमत में हाज़िर हुए और मुलाकात का संदेश भिजवाया। हज़रत ख़लीफतुल मसीह ने उन्हें बुलाया और पूछा, क्या कारण है कैसे आए? उन्होंने कहा कि मैंने तो अर्ज़ किया कि मैं इस पद के योग्य नहीं हूँ। हज़रत ख़लीफतुल मसीह सालिस ने कहा अच्छा भोजन का समय हो रहा है पहले खाना खाओ और चौधरी साहिब तब भी अपनी बात दोहराते रहे इस के बाद फिर कहते हैं कि हज़रत ख़लीफा सालिस ने मेरे कंधे पर हाथ रख कर कहा कि तुम्हें समय के ख़लीफा ने अमीर बनाया है और ख़ुदा का ख़लीफा बेहतर जानता है। कहते हैं कि इसके बाद कई कठिन से कठिन परिस्थितियां आईं लेकिन अल्लाह तआला की कृपा से मैं कभी नहीं घबराया और ख़िलाफत की दुआओं की वजह से मेरे हर काम होते रहे।

अल्लाह तआला उन से क्षमा और दया का व्यवहार करे उनके स्तर ऊंचा फरमाए उनके औलादों को भी वफा के साथ ख़िलाफत और जमाअत से जोड़े रखे और उनकी नेकियाँ जारी रखने की तौफीक प्रदान करे।

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

थे कि यह धन्यवाद का तरीका है। आप का खाना बहुत सरल हुआ करता था। इस पर भी और सादे कपड़ों में भी शुक्र अदा करते रहे। एक बार पूछा गया कि आपके गुनाह सब बख़्शे गए हैं तो इतना क्यों रो रोकर इबादत करते हैं? इस पर आप ने फरमाया कि क्या मैं अपने ख़ुदा का धन्यवाद न करूं जिसने मुझे इतना नवाज़ा है।

आप (स.अ.व.) की बन्दों के धन्यवाद की क्या गुणवत्ता थी। हज़रत अबू बकर आपने दोस्त थे और एक बार किसी ने हज़रत अबु बकर को कुछ कहा तो आप ने फरमाया कि मुझ पर सबसे अधिक एहसान अबू बकर ने किया है। आप (स.अ.व.) पर क्या एहसान हो सकता है? वह तो सेवा करने वाले का आप का सम्मान था लेकिन फिर भी धन्यवाद व्यक्त कर रहे हैं। हज़रत आयशा ने एक बार कहा कि आप क्या हज़रत ख़दीजा का वर्णन करते रहते हैं, हालांकि उन से बढ़कर ख़ुदा ने बीवियां दी हैं आप ने उन की सेवाओं का उल्लेख किया और हमेशा इस पर धन्यवाद किया।

नजाशी के उपकार को भी आप (स.अ.व.) ने हमेशा याद रखा और अपने कथन तथा कर्म से धन्यवाद व्यक्त भी किया एक बार उसका प्रतिनिधिमंडल हाज़िर हुआ तो ख़ुद खड़े हुए स्वागत किया और फ़रमाया उस ने हमारे साथियों को सम्मान दिया तो मैं चाहता हूं कि उसके एहसान का बदला ख़ुद उतारूँ।

नैतिकता के शिक्षक के रूप में भी अजीब शान दिखती है। एक बार हज़रत आयशा ने हज़रत सफिया के छोटे कद के बारे में कुछ कहा तो आप ने कहा कि यह ऐसा शब्द है कि समुंद्र में मिला दिया जाए तो उसे भी कड़वा कर दे।

पड़ोसियों से अच्छे व्यवहार की शिक्षा है। किसी ने पूछा कि मुझे कैसे पता चले कि मैं अच्छा हूँ तो फरमाया कि अपने पड़ोसियों से जब कहते सुनो कि तुम अच्छे हो तो अच्छे हो अगर सुनो कि तुम बुरे हो तो तुम बुरे हो। यही हाल आप अपने मानने वालों में देखना चाहते थे ।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम कहते हैं: वह व्यक्ति जिसने अपनी हस्ती से अपनी विशेषताओं से अपने कार्यों से अपने कामों से और अपनी आध्यात्मिक और पवित्र शक्तियों के पुरज़ोर दरिया से पूर्णता का उच्च नमूना कथनी तथा व्यावहारिक और सच्चाई के साथ दिखलाया और पूर्ण इंसान कहलाया। वह व्यक्ति जो सबसे अधिक पूर्ण और सम्पूर्ण आदमी था और पूर्ण नबी था और पूर्ण बरकतों के साथ आया जिससे आध्यात्मिक क़यामत के कारण से दुनिया की पहली क़यामत प्रकट हुई और एक संसार आलम मरा हुआ उसके आने से जीवित हो गया। वह मुबारक नबी हज़रत ख़ात्मल अंबिया नेकों का इमाम ख़ातमल मुरसलीन मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं। हे प्यारे ख़ुदा उसके प्यारे नबी पर वह रहमत और बरकत भेज जो दुनिया की उत्पत्ति से तूने किसी को न भेजा हो अगर यह भव्य नबी दुनिया में न आता तो जितने छोटे नबी दुनिया में आए जैसा कि यूनुस और अय्यूब और मसीह बिन मरियम और मलाकी और यूहन्ना और ज़करिया आदि उनकी सच्चाई पर हमारे पास कोई दलील नहीं थी हालांकि सब अंतरंग और सम्मान्नीय और ख़ुदा तआला के प्यारे थे। यह उस नबी का एहसान है कि ये लोग भी दुनिया में सच्चे माने गए। अल्लाहुम्मा सल्ले वसल्लम वबारिक अलैहि व आलेहि व असहाबेही अजमईन।

अंत में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई। दुआ के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदुल्लाह तआला कुर्सी सदारत पर रौनक अफ़रोज़ हुए और फरमाया कि कादियान वाले अपने तराने शुरू करें। हुज़ूर अनवर के इस इरशाद के पालन में कादियान से ख़ुद्दाम, अत्फाल और नासरात के समूह ने विभिन्न तराने पेश किए। तरानों के बाद हुज़ूर अनवर ने लंदन में मौजूद जमाअत के दोस्तों से कहा कि अब नमाज़ होगी जिसके बाद खाना होगा। हुज़ूर अनवर ने फरमाया कादियान के जलसा की कुल उपस्थिति 14,242 है। इंडोनेशिया से भी एक चार्टर जहाज इस बरकतों वाले जलसा में शामिल होने वालों को लेकर आया। लंदन में जलसा में शामिल होने वालों की संख्या 5,230 है।

(शेष.....)

(शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad